

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH 105

॥ ५ ॥

॥ ॐ नमो बल्लुयाय
गवसे नृप्यो प्रह
धुमवास्मिनामथह
नकिस्मर ॥ १ ॥ धुम
साधं महकाचवाधिस



॥ ॐ नमो बल्लुयाय
गवसे नृप्यो प्रह
धुमवास्मिनामथह
नकिस्मर ॥ १ ॥ धुम
साधं महकाचवाधिस

नखलपुष्प ॥ १ ॥ समथ हमावातगम्भीवावरासनामधर्मपर्याय समाधिसमा
पन्न ॥ १ ॥ नखलपुष्प ॥ १ ॥ समथ आर्यो वल्लोकिगम्भीव वाधिसलो महासह
च गम्भीवायां प्रहसवावमितायां चर्या भवव्यवलाकयकिस्मर ॥ १ ॥ पथ
स्तुच स्वरावभुत्यानव्यवला कयकिस्मर ॥ १ ॥ अथपुष्पात्तमालिपुष्पाव
द्वावरावनायां वल्लोकिगम्भीव वाधिसह महासह भवद्वारावराय ॥ १ ॥

॥ प्र ॥

कथितं कृतं पञ्चावा कृतं इति वा. अस्मागमीनायां प्रहृषयामितायां
चर्याचरेति का मतः ॥ न कथं सिद्धि कथं ॥ वं मृतं आर्याव लाकिन
ध्वजवाधिसत्त्व महासत्त्व न भालियज्ञा यथा कर्म देवा चरु ॥ यत्कश्चि
कृतं पञ्चावा कृतं इति वा. अस्मागमीनायां प्रहृषयामितायां चर्याच
रेति का मतः न वं मृतं आर्याव लाकिन ॥ यत्कश्चि सत्त्व महासत्त्व न वला क

शोक्तं ॥ वृद्धं भूतं ॥ भूतं केवद्वयं न वृषा पृथक् भूतं न भूतं या पृथक्
युयं ॥ वदना भूतं ॥ भूतं केवद्वयं न वदना या पृथक् भूतं न भूतं या पृ
थक् वदना ॥ संसृष्टं भूतं केवद्वयं न संसृष्टं या पृथक् भूतं न भूतं या पृ
थक् संसृष्टं ॥ संसृष्टं वभूतं ॥ भूतं केवद्वयं न संसृष्टं या पृथक् भूतं न
न भूतं या पृथक् संसृष्टं ॥ विसृष्टं भूतं ॥ भूतं केवद्वयं न विसृष्टं न विसृष्टं

॥५॥

थकगन्ध. नभू न्यताया पथकविह्वनं ॥ १ ॥ चर्वरुदकभालिपूजा
४ सर्वधर्मोस्वराधनगन्ध्या ॥ २ ॥ श्लेत्तकोत्तानत्यन्ता ॥ ३ ॥ लिम्बुममवाविसल
नृत्तुसंपूर्ण ॥ ४ ॥ गस्माहर्हिभालिपूजा ॥ ५ ॥ न्यताया ननृपं. नवदत्ता. न
संस्तु. नसस्त्रावा. नविह्वनं. नचक्र. नशुभक. नद्याहं. नजिह्व. नवायान
नृप. नगद. नगारध्व. ननेश. नमस्तु ॥ ६ ॥ नधर्मो. नचक्रध्व. ननृपध

३. नचक्रविह्वनध्व. नशुभकविह्वनध्व. नद्याहविह्वनध्व. नजि
ह्वविह्वनध्व. नवायविह्वनध्व. नमनाविह्वनध्व. नविद्याध्व
नसस्त्रावाध्व. नविह्वनाध्व. ननृपाध्व. नसंस्तु. नइह्व. नसमद
था. ननिवाध्व. नमान. नवाग. ननृपं. नह्वनं. नप्राप्ति. नाप्राप्ति ॥ ७ ॥ गस्मा
हर्हिभालिपूजा. गृहमपिह्वान्वाधिसत्त्वमहासत्त्वा. प्रह्वपावसिताः

५॥

मात्रि सुविह न किंचिद्वा ल म न मा क वा क शून रु न ता विष याः भ नि
का का निष्ठा निर्वो ह म प्रा श्ना ॥ सर्व वृद्धे न पि प्र ह्म या न मि ता मा ग
वा न रु न या या सं म्प क्कं वा धि न रि सं व ज्ञा ॥ क स्मा रु हि भ वि पू ४
ह क य ॥ प्र ह्म या न मि ता म क्क शून रु न म क्क न प मा म क्क स म या
म क्क ४ सर्व इ स व प्र म म ना म क्क ४ सं म क मि थ्वा च्च ॥ प्र ह्म या न मि

ता य्क्ता म क्क ४ क थ्वा ॥ उं ग क ग क पा नं ग क पा न सं ग क वा धि स
हा ॥ ॥ ज वं भ वि पू ग म्ही ना यां प्र ह्म या न मि ता यां मि क्क रु यं
वा धि स व म हा स व न ॥ अ थ ख ल रु ग वा न क स्मा रु हि स मा ध्व व
रु या र्था व लो कि क थ्वा य वा धि स व्वा य म हा स व्वा य सा ध्वा न
म दा क्क सा ध्वा २ क ल य्क्क ज वं म क्क म्ही ना यां प्र ह्म या न मि ता यां प्र

॥ प्र ॥

चरुच्यं यथा त्रया निर्दुष्टं कदनमायं सर्वकथा गते ब्रह्मपि. सस्य
चक्रं वृक्षं वनभादिनाम् ॥ १ ॥ ॐ दंस वाच इह गवानागमनाय
ष्माभा विपुला यथा वलाकिताश्च वधाधिस्तथा महासत्तामान. स ७
र्वावति यथैव गदवमाना यथा स्रगज उगधर्वश्च लाकाह गवता हवि
तमस्य नन्दनिति ॥ ॥ इति श्री श्रार्य प्रह्लादात्मिका द्वादशस्कन्धः ॥

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार DH 105